# इकाई 31 भारतीय भाषाएँ और साहित्य

## इकाई की रूपरेखा


31.0 उद्देश्य
31.1 प्रस्तावना
31.2 अरबी और फारसी
31.3 संस्कृत
31.4 उत्तर भारत
  31.4.1 हिंदी
  31.4.2 उर्दू
  31.4.3 पंजाबी
31.5 पश्चिमी भारत
  31.5.1 गुजराती
  31.5.2 मराठी
31.6 पूर्वी भारत
  31.6.1 बंगला
  31.6.2 असमी
  31.6.3 उड़िया
31.7 दक्षिण भारतीय भाषाएं
  31.7.1 तमिल
  31.7.2 तेलुगु
  31.7.3 कन्नड़
  31.7.4 मलयालम
31.8 सारांश
31.9 शब्दावली
31.10 बोध प्रश्नों के उत्तर


## 31.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम 16वीं-18वीं शताब्दियों के दौरान भारत में विभिन्न भाषाओं में विकसित होने वाले साहित्य के बारे में विचार विमर्श करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- इस काल के दौरान विकसित साहित्य की समृद्धि और अनेकरूपता का अवलोकन कर सकेंगे;
- भारत में लिखे गये अरबी, फारसी, संस्कृत, हिंदी, पंजाबी, बंगला, असमी, उड़िया, तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ भाषाओं के साहित्य की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे; और
- उपर्युक्त भाषाओं में लिखने वाले कुछ इतिहासकारों, लेखकों और कवियों के बारे में जान सकेंगे।

## 31.1 प्रस्तावना

मुगल शासन की स्थापना से भारत में कुछ हद तक राजनैतिक एकता कायम हुई। इस शासन काल में न केवल आंतरिक बाजार आपस में जुड़े बल्कि विदेशी व्यापार में भी वृद्धि हुई। इसके साथ-साथ सर्जनात्मक बौद्धिक गतिविधियों के लिए भी माहौल निर्मित हुआ। सम्राटों के अलावा मुगल शाहजादों और सामंतों ने भी साहित्यिक गतिविधियों को संरक्षण दिया। राजपूत राजा और दक्खन तथा दक्षिण भारतीय शासक भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं रहे। मुख्य रूप से भक्ति आंदोलन से प्रभावित होकर इस काल में विभिन्न देशी भाषाओं में

समानांतर रूप मे लोकप्रिय साहित्य विकसित हुआ।

खंड I में हम पहले ही फारसी और अन्य भाषाओं में लिखी ऐतिहासिक कृतियों पर विचार विमर्श कर चुके हैं। इस इकाई में हम ऐतिहासिक कृतियों की चर्चा नहीं करेंगे। हम अपनी चर्चा को साहित्य तक ही सीमित रखेंगे।

सभी भाषाओं में लिखे गये समग्र साहित्य को समेटना असंभव है। हमारा मुख्य उद्देश्य देश के विभिन्न भागों में लिखी जा रही प्रमुख साहित्यिक रचनाओं से आपको परिचित कराना है।

## 31.2 अरबी और फारसी

मुगलों के अधीन अरबी भाषा में लिखा गया साहित्य मुख्य रूप से धार्मिक प्रकृति का था पर कुछ कवियों ने अरबी भाषा में कविताएं भी लिखीं।

फारसी मुगल दरबार की सरकारी भाषा थी। प्रथम मुगल शासक, बाबर, एक कुशल लेखक था और उसने तुर्की में अपना संस्मरण लिखा था जिसे बाद में अब्दुर रहीम खानखाना ने फारसी में अनूदित किया। बाबर ने **मसनवी मुबीन** नामक एक उपदेशात्मक ग्रंथ भी लिखा है। भारत में फारसी साहित्य के विकास में बाबर का महत्वपूर्ण योगदान यह है कि वह अपने साथ कई फारसी कवियों को लेकर आया। हुमायूँ के ईरान से वापस लौटने के बाद भारत में फारसी लेखकों का आगमन तेजी से हुआ। ईरान के शाह तहमस्प के दरबार में उसकी कई कवियों और कलाकारों से मुलाकात हुई थी। उनमें से कुछ कवियों और कलाकारों से उसने भारत चलने का अनुरोध किया। बाद में अपना दरबार कायम करने के बाद उसने देशी कवियों और लेखकों के साथ-साथ बाहर से आने वाले प्रतिभाशाली कवियों और लेखकों की कृतियों का भी सम्मान किया।

16-17वीं शताब्दी के दौरान फारसी कवियों का एक समूह भारत आया था। इन कवियों ने फारसी साहित्य को एक नये रूप में प्रस्तुत किया। इसे **सबक-ए-हिंदी** (भारतीय शैली) के रूप में जाना गया। अकबर से लेकर शाहजहाँ तक ने इस धारा के कवियों को संरक्षण दिया। इसमें फैजी, उर्फी, नजीरी, तालिब-अमूली, कालिम, गनी कश्मीरी, सायब और बेदिल जैसे महान् भारतीय और फारसी लेखक शामिल हैं।

अक्सर मुगल सम्राट और राजकुमार खुद भी कविताएं लिखा करते थे, उदाहरण के लिए हुमायूँ ने एक फारसी दीवान लिखा। अबुल फजल के अनुसार अकबर के दरबार में हजारों कवि उपस्थित रहते थे। फैजी के अलावा गजली मश्नदी भी एक मशहूर और बहुत ही तेजस्वी कवि था। उसने कई मसनवियाँ लिखीं। गजली मश्नदी के उत्तराधिकारी के रूप में फैजी आया। उसकी प्रमुख कृतियों में एक दीवान शामिल है। जिसका शीर्षक **तबशिर-अल-सुबह** है। इसमें **कसीदा, गजल, मरसिया, किता** और **रूबाइयां** शामिल हैं। समय के साहित्यिक चलन के अनुरूप उसने एक **खामसाह** लिखने की योजना भी बनाई थी, पर वह अधूरा ही लिख पाया, उदाहरण के लिए **नल दमयंती**। फैजी के गद्य ग्रंथों में **लीलावती** का फारसी रूपांतरण, उसके संदेश पत्र और हिंदू धार्मिक ग्रंथों के फारसी अनुवाद शामिल हैं। कुछ आलोचकों के अनुसार फैजी का तुर्की में बड़ा सम्मान था और उसके प्रभाव के कारण ही भारतीय-फारसी कविता का भारत के बाहर भी प्रचार प्रसार हुआ।

अब्दुर रहीम खानखाना एक जाना माना विद्वान और तेजस्वी कवि था। उसने अकबर और जहांगीर दोनों का शासनकाल देखा था। उसके पास एक विशाल पुस्तकालय था, जिसमें चार हजार से भी ज्यादा पुस्तकें थीं। यह पुस्तकालय भी उसकी समृद्धि का प्रमुख कारण था। उसने नजीर निशपुरी, उर्फी शिराजी और मुल्ला अब्दुल बाकी निहवंदी जैसे कई लेखकों को संरक्षण प्रदान किया था।

शाहजहां को फारसी साहित्य और साहित्यकारों का महान् संरक्षक कहा जाता था। समकालीन फारसी कवि अली कुली सलेम के अनुसार उसके शासनकाल में भारत में फारसी कविता अपने उत्कर्ष पर थी। शाहजहां के दरबारी कवि के रूप में कुदसी का स्थान हमादान के अबु तालिब कालिम ने लिया। उसने अपने दीवान के अतिरिक्त शाहजहां की उपलब्धियों पर आधारित **पादशाहनामा** नामक महाकाव्य भी लिखा। तबरीज का मिर्जा मुहम्मद अली

सायब इस काल का महानतम फारसी कवि था। उसने फारसी कविता को एक नयी शैली प्रदान की। इसफहान लौटने पर भारत को दूसरा स्वर्ग कहकर उसने इस देश के प्रति अपनी कृतज्ञता जाहिर की। इस प्रकार मुगल शासकीय वर्ग के संरक्षण के कारण न केवल फारसी साहित्य की एक नयी शैली विकसित हुई बल्कि इससे गद्य लेखन में भी निखार आया।

दक्षिण में, बीजापुर के आदिल शाही शासकों ने फारसी साहित्य को भरपूर संरक्षण प्रदान किया। इब्राहीम अदिल शाह द्वितीय (1580-1626) के दरबार में उत्तर भारत और मध्य एशिया से अनेक लेखक और कवि एकत्रित होने लगे। आदिलशाही राजवंश का संरक्षण पाने वाले कवियों में मलिक कुम्मी (मृत्यु 1640 ई.) का नाम महत्वपूर्ण है। उसका समकालीन कवि मुल्ला ज़ूहूरी निश्चित रूप से दक्खन का महानतम फारसी कवि था। उसने कविता और गद्य लेखन दोनों क्षेत्रों में एक नयी शैली विकसित की और सादी के **गुलिस्तां** के नमूने पर **साकीनामा** नामक पुस्तक लिखी। गोलकुंडा के कुतुब शाहियों ने भी फारसी विद्वानों और साहित्य को संरक्षण प्रदान किया। इनके संरक्षण में फारसी भाषा में अनेक पुस्तकें लिखी गयीं। अब्दुल्ला कुतुब शाह के संरक्षण में 1651 ई. में मुहम्मद हुसैन तबरेजी ने अपना फारसी शब्दकोश निर्मित किया। 1681 ई. में बुस्तमी ने **हदीकल सलातीन** शीर्षक से प्रमुख फारसी कवियों की जीवनी प्रस्तुत की।

मुहम्मद कुली कुतुब शाह के शासनकाल में कुतुब शाही राज्यवंश के चार ऐतिहासिक अभिलेखों को छंद में ढाला गया। अबु इमाद ने **खिर कतुल आलम** नाम से छह खंडों में एक बृहद् संदर्भ ग्रंथ निर्मित किया। इनसे पता चलता है कि कुतुबशाही शासकों का ईरानी संस्कृति से लगाव बना हुआ था और वे इसमें रुचि भी लेते थे। साथ ही यह भी लगता है कि कुतुबशाही शासक अपने राज्य में आने वाले फारसी विद्वानों का गर्मजोशी से स्वागत और सम्मान करते थे। इसके परिणामस्वरूप फारसी ने दक्षिण में बीजापुर और गोलकुंडा की क्षेत्रीय दरबारी भाषा के रूप में पैर जमा लिया।

फारसी भाषा में रहस्यवादी या सूफी साहित्य भी लिखा गया। इसके अंतर्गत सूफियों द्वारा रहस्यवाद पर लिखे शोध ग्रंथ, सूफियों द्वारा लिखे गये पत्र **मलफूजात** (सूफी संतों की बहस), सूफियों की जीवनियां और सूफी कविता के संग्रह शामिल हैं।

शाहजादा दारा शिकोह ने **सकीनतुल औलिया** शीर्षक से सूफी मियां मीर और उनके शिष्यों की जीवनी लिखी है। **मजमउल बहरैन** (दो सागरों का मिलन) सूफीवाद से संबद्ध एक अन्य ग्रंथ है। इस कृति में उसने इस्लामी सूफी अवधारणाओं की तुलना हिंदू दार्शनिक दृष्टिकोण के साथ की है।

इस काल में मुगल सम्राटों ने महान् भारतीय ग्रंथों को फारसी में अनूदित करवाकर फारसी साहित्य को समृद्ध बनाया। अकबर के समय में **सिंहासन बतीसी**, **रामायण** और **कल्हण** की **राजतरंगिणी** का अनुवाद हो चुका था। ये सभी अनुवाद बदायूनी ने किये थे।

मुगल दरबार में विकसित हो रहे फारसी साहित्य का क्षेत्रीय साहित्य के विकास पर अच्छा खासा प्रभाव पड़ा। साहित्यिक उर्दू भाषा का विकास इसी का परिणाम था। पंजाबी, पश्तो, सिंधी, बलूची और कश्मीरी जैसी भाषाओं के विकास में भी फारसी परंपरा का महत्वपूर्ण योगदान है।

## 31.3 संस्कृत

मध्यकाल में संस्कृत दरबार की प्रमुख भाषा नहीं रह गयी। हालांकि मुगल सम्राटों और दारा जैसे राजकुमारों ने संस्कृत विद्वानों को संरक्षण दिया पर उत्तर भारत में इसका पहले जैसा महत्व नहीं रहा। दूसरी तरफ दक्षिण में माधवाचार्य और शंकराचार्य के प्रभाव के कारण संस्कृत साहित्य फलता फूलता रहा और विजयनगर के राजाओं ने उसे संरक्षण भी प्रदान किया। 1565 ई. के बाद तुलुवा और अराविडु राजवंशों के शासकों, तंजोर के नायकों और कोचीन तथा त्रावणकोर के सरदारों ने संस्कृत को संरक्षण देने की परम्परा जारी रखी। संस्कृत साहित्य की कई विधाएं, महाकाव्य, श्लेष काव्य, चम्पू काव्य, नाटक और खासकर ऐतिहासिक काव्य, विकसित होती रहीं। महाकाव्य के क्षेत्र में तंजोर के शासक रघुनाथ

नायक और उसके दरबारी कवियों का उल्लेख किया जा सकता है। उसकी कई कृतियों में उसके पिता अच्युत की जीवनी का विशेष महत्व है। जिंजी के नायकों के एक मंत्री, श्रीनिवास दीक्षित ने कई रचनाएं लिखी थीं। उसकी रचनाओं में अठारह नाटक और साठ काव्य ग्रंथ शामिल हैं। गोविंद दीक्षित तंजोर के नायक के दरबार का एक अन्य महान् साहित्यकार था। **साहित्य सुधा** और **संगीतसुधानिधि** उसकी महान् रचनाएं हैं।

वेल्लोर के नायक सरदारों ने एक अन्य संस्कृत विद्वान अप्पय दीक्षित (1520-92) को प्रश्रय दिया था। उसने संस्कृत की ज्ञान परम्परा की अनेक शाखाओं पर सौ से अधिक ग्रंथ लिखे।

नीलांत दीक्षित (17वीं शताब्दी) मदुरा के तिरुमलनायक का एक मंत्री था। उसने कई महाकाव्य लिखे। उसके शिव लीला और भगीरथ की तपस्या से सम्बद्ध काव्य को विद्वान उच्च कोटि का मानते हैं।

इस काल का एक महत्वपूर्ण संस्कृत कवि चक्रकवि, कोझीकोडे के राजा मानदेव जमोरी (1637-1648) का मित्र था। उसने **जानकी परिणय** और **नारायण** या **नारायण भट्टतीरे** नामक महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे। मानदेव जमोरी ने संस्कृत साहित्य को काव्य, मीमांसा, व्याकरण आदि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण ग्रंथ दिए। महाकाव्य के क्षेत्र में वह बहुत प्रतिभावान था। उसे केरल का महानतम कवि माना गया।

इस काल में लिखे गये ऐतिहासिक ''काव्यों'' और ''नाटकों'' में इन संस्कृत लेखकों के सामाजिक दृष्टिकोण की झलक मिलती है जो अभी तक शास्त्रीय नियमों की वकालत करते आ रहे थे। एक रोचक तथ्य यह है कि इन प्रारंभिक ऐतिहासिक काव्यों में से एक काव्य एक महिला द्वारा भी रचित है। इसका नाम तिरुमल्लांबा है जिसे अभिलेख में 'पाठक' बताया गया है। उसकी कृति **वरदगुम्बिका परिणय** में अच्युतदेवराय के विवाह की कथा है। इस कृति का ऐतिहासिक महत्व होने के साथ-साथ यह उस काल में ''चम्पू'' काव्य का बेहतरीन नमूना है।

तंजोर के रघुमल्ल नायक की वीरता को लेकर अनेक वीरकाव्य लिखे गये पर इसमें गोविंद दीक्षित रचित **रघुनाथभ्युदय** उल्लेखनीय है। इसमें कई ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन है।

शिवाजी और उनके पुत्र के जीवन को आधारित कर लिखे गये कई महाकाव्य मराठा इतिहास के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इस संदर्भ में **अनुभरत** या **शिव भरत** नामक काव्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। शिवाजी के समकालीन कवीन्द्र परमानंद ने यह कार्य शुरू किया। उसके पुत्र देवदत्त ने इसे जारी रखा और उसके पोते गोविंद ने शम्भूजी के जीवन का वर्णन किया।

एक रोचक तथ्य यह है कि ऐतिहासिक काव्यों में दरबारी कवियों ने मुसलमान शासकों को भी नायक के रूप में पेश किया है। मसलन, पंडित जगन्नाथ ने दारा शिकोह की प्रशंसा में **जगदभ** और आसफ खां के लिए **आसफ विलास** लिखा। दारा शिकोह ने खुद बनारस के नृसिह सरस्वती के सम्मान में एक प्रशस्ति की रचना की।

दक्षिण भारत में लिखित तर्क ग्रंथों में सबसे ज्यादा लोकप्रिय **तर्क संग्रह** (लगभग 1625 ई.) है। इसका लेखक अनामभट्ट चित्तूर जिले का रहने वाला था। उसने कई दार्शनिक ग्रंथों पर टीकाएं भी लिखी थीं। द्वैत दर्शन के क्षेत्र में वियसराय (मृ. 1537) और उसके शिष्य विजयेन्द्र (1576) का विशेष योगदान है। वियसराय ने **भदोजजीवन, तात्पर्यचन्द्रिका** और **न्यायमित्र** नामक ग्रंथ लिखे। विजयेन्द्र ने **उपसंहारविजय** और **माधव तंत्रमुख भूषण** नामक रचनाएं रचीं। अहमदनगर के निजामशाही दरबार के एक उच्च पदाधिकारी दलपति (1490-1533) ने **नृम्हिप्रद** नामक वृहद ग्रंथ लिखा जो धर्म और नागरिक कानूनों से सम्बद्ध था।

ऊपर दिए गए सभी उदाहरणों के बावजूद संस्कृत साहित्य पतनोन्मुख था। लेखक मूल रचनाओं का लेखन करने के बजाय टीकाओं पर अधिक ध्यान केन्द्रित कर रहे थे। हालांकि वैज्ञानिक ग्रंथ लिखे जा रहे थे और संगीत और दर्शन पर अध्ययन जारी था, पर इनकी संख्या काफी कम थी। मुख्य रूप से इस समय रूप की तकनीक और व्याकरण ग्रंथों की टीकाओं से सम्बद्ध ग्रंथ लिखे गये। संस्कृत साहित्य के पतन का एक महत्वपूर्ण कारण इस काल के दौरान देशी साहित्य का उदय माना जाता है। भक्ति आंदोलन ने पूरे देश को प्रभावित किया। इससे क्षेत्रीय कवि अपनी बोलचाल की भाषा में छंदबद्ध काव्य लिखने को प्रेरित हुए।

यह भाषा बोलचाल की भाषा के नजदीक थी। इन साहित्यिक कृतियों की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि सामान्य जन के साथ-साथ कुलीन वर्ग भी इसकी ओर तेजी से आकर्षित हुआ।

**बोध प्रश्न 1**

1) निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए :

क) रहस्यवादी साहित्य :

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

ख) दक्षिण भारत की फारसी साहित्यिक कृतियाँ :

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

ग) फारसी भाषा में श्रेष्ठ भारतीय ग्रंथों का अनुवाद :

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

2) 16वीं-17वीं शताब्दियों के दौरान संस्कृत भाषा में लिखी गयी कृतियों पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

..........................................................................................

## 31.4 उत्तर भारत

उत्तर भारत में मुख्य रूप स ाहदा, उर्दू और पंजाबी भाषा में साहित्य का निर्माण हुआ।

### 31.4.1 हिंदी

हिंदी भाषा के विकास की कहानी लंबी है। यह कई कालों और दौरों से गुजरकर अपने आधुनिक स्वरूप में हमारे सामने है। उत्तरी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली बोलियों का इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। इन बोलियों में ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी, मैथिली, भोजपुरी, मालवी आदि प्रमुख हैं, हिंदी के एक मिश्रित रूप खड़ी बोली का उदय भी 15वीं-16वीं शताब्दियों के दौरान हुआ।

हिंदी का उद्गम 7वीं से दसवीं शताब्दी के बीच हुआ। इस समय हिंदी अपभ्रंश रूप में उभर रही थी। हिंदी साहित्य के आरंभिक काल को वीरगाथा काल के नाम से जाना जाता है। इस काल में कवियों ने राजपूत राजाओं और सरदारों की कीर्ति में काव्यों की रचनाएं कीं। ऐसी कविताओं में '**पृथ्वीराज रासो**', '**हमीर रासो**' आदि प्रमुख हैं।

इसके बाद भक्तिकाल का दौर शुरू हुआ। कबीर इस युग के सबसे महत्वपूर्ण कवि थे। यह परम्परा 16वीं-17वीं शताब्दियों के दौरान भी जारी रही। संस्कृत के भ्रष्ट रूप मागधी-प्राकृत से हिंदी भाषा का विकास हुआ और भक्तिकाल में इस भाषा में अभूतपूर्व रचनाएं सामने आयीं। गोस्वामी तुलसीदास ने अपने लेखन के माध्यम से इस भाषा को सर्जनात्मक शक्ति प्रदान की। इनका जन्म 1523 ई. के आसपास पूर्वी उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्होंने सन्यास धारण कर लिया और 1574 ई. में अपनी विख्यात पुस्तक **रामचरित मानस** की रचना शुरू की। तुलसीदास ने इसकी रचना अवधी लोकभाषा में की। लोकभाषा में लिखे होने के कारण यह ग्रंथ अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। तुलसीदास ने अपने इस ग्रंथ में राम को आदर्श पुरुष के रूप में प्रस्तुत किया। इसमें उन्होंने भक्ति का आदर्श स्थापित किया।

तुलसीदास ने अनेक ग्रंथों की रचना की लेकिन **विनयपत्रिका** में उनका दर्शन अधिक मुखर हुआ है। हालांकि उन्होंने ईश्वर मात्र के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना की शिक्षा दी थी पर अपने व्यक्तिगत जीवन में वे एक ईश्वर की पूजा करते थे और उसी के प्रति समर्पित थे। तुलसीदास ने अग्रदास और नाभादास जैसे अन्य भक्त कवियों को भी प्रेरित किया। इन्होंने भक्तमाल की रचना की थी जिसमें प्राचीन काल के वैष्णव संतों तक का उल्लेख किया गया था।

राम के अलावा कृष्ण की भी ईश्वर के अवतार के रूप में पूजा की गयी और उनके प्रति भक्ति भाव प्रकट किया गया। कृष्ण के प्रति भक्ति करने वाले कवियों को "अष्टछाप" के नाम से जाना गया। ये सभी आठ कवि वल्लभाचार्य के शिष्य थे। इनमें सूरदास सर्वोत्तम माने गये। उनका रचना काल 1503-1563 ई. के बीच का है। मीराबाई ने कृष्ण भक्ति को एक नया आयाम दिया। राजपूत घराने की इस रानी ने सन्यासिनी का वेश धारण किया। मीरा खुद कई रोमांटिक दंत कथाओं की नायिका बन गयीं। अपने गीतों में उन्होंने कृष्ण को प्रेमी के रूप में चित्रित किया और अपने आराध्य देव के प्रति एक "भक्त" के समान खुद को पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। ये गीत मूल रूप से राजस्थान की मारवाड़ी बोली में रचे गये थे पर बाद में बोलचाल के क्रम में उसमें ब्रजभाषा का प्रभाव पड़ गया। यह भाषा मुख्य रूप से गुजरात और उत्तरी भारत के हिस्सों में लोकप्रिय थी।

सूफी कवियों ने अवधी भाषा में अपनी रचनाएं लिखीं और अपने रहस्यवादी दर्शन को अभिव्यक्त करने के लिए लोककथाओं का सहारा लिया। अधिकांशतः प्रेमकथाएं ही अभिव्यक्ति का माध्यम बनीं। इस प्रकार के लेखकों में **चंदायन** के लेखक मुल्ला दाउद और **मृगावती** के लेखक कुतुबन का नाम लिया जा सकता है। पर इस परम्परा के महान् कवि मलिक मुहम्मद जायसी थे जिन्होंने 1520-40 ई. के बीच प्रसिद्ध ग्रंथ **पद्मावत** की रचना की। इसमें अलाउद्दीन खिलजी और चित्तोड़ की रानी पद्मिनी की लोकप्रिय लोककथा का विस्तार से रहस्यवादी विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह कृति विषय की दृष्टि से तो उल्लेखनीय है ही, इसमें अवधी भाषा को एक नया स्वरूप भी प्रदान किया गया है। इससे अवधी भाषा की सर्जनात्मक क्षमता में वृद्धि हुई। 17वीं और 18वीं शताब्दियों के मुसलमान कवियों में उस्मान शेख नबी, कासिम और मीर मुहम्मद उल्लेखनीय हैं।

अकबर के संरक्षण में ब्रजभाषा साहित्य समृद्ध हुआ और तानसेन जैसे संगीतकारों तथा अब्दुर रहीम खानखाना जैसे कवियों ने कृष्ण की लीला संबंधी पद रचे।

## 31.4.2 उर्दू

तुर्की "उर्दू" शब्द का अर्थ सैनिक छावनी है। यह 14वीं शताब्दी के बाद दक्खन और दक्षिणी भारत में शासन कर रहे मुसलमानों की बोली के रूप में उभरी। इसका साहित्यिक रूप 15वीं शताब्दी में सामने आया जिसे "दक्खनी" के रूप में जाना गया। हालांकि इस भाषा में मुस्लिम शासन के पहले के काल की बोलियों की झलक मिलती है पर इसका मुख्य प्रेरणा

स्रोत तत्कालीन फारसी साहित्य बना। रूप और विषय उन्होंने इसी साहित्य से ग्रहण किया। यह प्रवृत्ति 17वीं शताब्दी के अंत तक कायम रही और यहां तक कि इसकी लिपि भी फारसी अरबी बनी रही।

गुजरात, बीजापुर, गोलकुंडा, औरंगाबाद और बीदर दक्खनी साहित्य के प्रमुख केंद्र थे। मुसलमानी हिंदी परम्परा के सबसे प्राचीन लेखक प्रसिद्ध सूफी कवि सैयद बंदा नवाज गेसूदराज (मिराज़ उल आशिकी का लेखक) हैं जिन्होंने 1422 ई. में बहमनी राज्य की राजनीति में मुख्य भूमिका अदा की थी।

इस साहित्यिक रूप के दो प्रमुख कवि शाह अली मोहम्मद जान और शेख खूब मोहम्मद ने गुजरात में रहकर अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं। गोलकुंडा के कुतुबशाही सुल्तान दक्खनी साहित्य के प्रमुख संरक्षक थे। उनमें मुहम्मद कुली कुतुब शाह (1580-1619) खुद कवि था। इसके अलावा उसके दरबारी कवि मुल्ला वजही ने उन्हें अपने काव्य के रोमांटिक नायक के रूप में भी प्रस्तुत किया। गोलकुंडा में रहने वाले उल्लेखनीय कवियों में घसवी, इब्नी, निशाती और तबी का नाम प्रमुख है।

बीजापुर का सुल्तान इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय (1580-1626) कला एवं संस्कृति का एक महान् संरक्षक था और उसने स्वयं दक्खनी संगीत पर एक पुस्तक लिखी थी। दक्खनी कवि अपनी कृतियों में स्थानीय घटनाओं और वृत्तांतों का भी उल्लेख करते थे। हसन शौकी ने अपनी एक कविता में तालिकोटा के युद्ध (1565) का उल्लेख किया है। इस युद्ध में दक्खन के मुसलमान सुल्तानों ने विजयनगर के हिंदू राज्य पर विजय प्राप्त की थी। रूस्तमी और मलिक खुनसुद के समान अधिकांश कवि मुसलमान थे, पर हिंदू भी इस भाषा में कविता रचते थे। हिंदू कवियों में सर्वप्रथम एक हिंदू, ब्राह्मण था जो "नुसरती" के नाम से कविता लिखता था। **अलीनामा** और **गुलशने इश्क** उसकी प्रमुख कृतियां हैं। **अलीनामा** एक लंबी कविता है जिसमें कवि ने अपने आश्रयदाता अली आदिल शाह द्वितीय (1656-1672) का जयगान किया है। **गुलशने इश्क** में मनोहर नामक हिंदू और मधुमालती की प्रेमकथा को विषय बनाया गया है। उन्हें कविता के नायक-नायिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

रूस्तमी की प्रमुख कृतियों में **खावरनामा** का नाम सर्वोपरि आता है। वजही दूसरा महत्वपूर्ण कवि है। उन्होंने **कुतबो मुश्तरी**, एक **मसनवी** और **सब रस** (गद्य रचना) की रचना की। वली दक्खनी इस काल का सबसे महत्वपूर्ण उर्दू कवि था। उर्दू कविता को गज़ल शैली से उसी ने परिचित करवाया। उसने फारसी परम्परा की तर्ज पर उर्दू गज़ल का विकास किया। वली की दृष्टि तीक्ष्ण थी, उसकी अनुभूति प्रबल थी और उसकी शैली में फैलाव और अनेकरूपता थी। उसके समकालीन उर्दू कवि मिर्जा दाउद ने भी इस काल में उर्दू साहित्य के विकास में योगदान किया।

1750 ई. तक दिल्ली क्षेत्र में उर्दू अच्छी तरह जम गयी और दक्खन पर औरंगजेब के अभियान के बाद दक्खनी का पतन हो गया।

## 31.4.3 पंजाबी

पंजाबी भाषा संस्कृत के एक अपभ्रष्ट रूप सौरशेनी प्राकृत या और स्पष्ट रूप से कहें तो सौरशेनी अपभ्रंश से निकली है। ब्रजभाषा और राजस्थानी के साथ-साथ पंजाबी का व्याकरणिक आधार एक है। हालांकि गुरुनानक (1469-1538) के पहले का लिखित पंजाबी साहित्य प्राप्त नहीं हुआ है। 'आदि ग्रंथ' इस भाषा की प्रारंभिक कृति है, जिसे 1604 ई. में गुरू अर्जुन देव ने संग्रहीत किया था। इस ग्रंथ से एक शब्द निकालना या जोड़ना पाप माना गया है अतः यह अपने मूल रूप में सुरक्षित है। इस प्रकार यह मध्यकालीन साहित्य का सर्वोत्तम प्रारूप है।

इस ग्रंथ में गुरुओं ने ईश्वर के रूवरूप और महिमा का बखान किया है और इस ग्रंथ को विभिन्न राग वाले पदों से संवारा गया है। गुरुनानक की वाणी में उपदेशात्मकता का स्वर प्रमुख है। उनके ये उपदेश गहरी तपस्या, अंतः प्रज्ञात्मकता और सहज बोध को ही अभिव्यक्त करते हैं।

गुरुओं के अलावा सिक्ख धर्म के प्रचार प्रसार के लिए भाई गुरुदास (1559-1637) ने भी कविताओं की रचना की। उनकी छंद पर असाधारण पकड़ थी। उनके बाद भक्ति साहित्य से

सम्बद्ध अनेक रचनाएं प्रकाशित हुईं। इससे पंजाबी या गुरुमुखी भाषा समृद्ध हुई।

काव्य के अलावा गद्य रचनाएँ भी सामने आयीं। इनमें मुख्य रूप से जनम साखियां नाम से जीवनियां लिखी गयीं। सिक्ख धर्म के सिद्धांतों और वचनों को भी गद्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। गैर धार्मिक क्षेत्र में अधिकतर प्रेम कथाओं की रचना की गयी। इन्हें "किस्सा" के नाम से जाना गया। इनकी रचना मुख्य रूप से मुसलमान लेखकों ने की है। इन प्रेम कथाओं में हीर रांझा और मिर्जा तथा साहिबान की कथाएं प्रमुख हैं। हीर और रांझा कथा के सर्वोत्तम प्रवक्ता वारिस शाह हैं। वारिस शाह एक कुशल कवि थे जिनकी संवाद पर असाधारण पकड़ थी। कथा में मार्मिक अंशों और त्रासदिक तत्वों के समावेश में वे सिद्हस्त थे। नायक और नायिका की मृत्यु का वर्णन करते हुए उनकी यह कला अपने उत्कर्ष पर पहुंची दिखाई देती है।

मिर्जा-साहिबान की कथा का सर्वोत्तम रूप कवि पीलू की रचना में देखने को मिलता है। उसने गहराई में जाकर नायिका साहिबान के मनोवैज्ञानिक द्वंद्व का चित्रण किया है जिसमें नायिका अपने परिवार के प्रति निष्ठा और मिर्जा के प्रति प्रेम के दोहरे पाट में पिसती दिखाई गई है।

एक हिंदू कवि अग्र ने हकीकत राय नामक एक सिक्ख युवा की शहादत की गाथा गाई है। यह युवक शाहजहां के शासनकाल में लाहौर में अपने धर्म के लिए शहीद हो गया था।

सूफी कवियों ने भी पंजाबी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनमें सुल्तान बाहु (1631-91) प्रमुख है। वह झंग क्षेत्र का रहने वाला एक सूफी था। उसने अपनी कविताओं के माध्यम से ईश्वर से मिलन और भक्ति का प्रतिपादन किया है।

शाह हुसैन एक घुमक्कड़ संत फकीर थे जो गांव-गांव घूमा करते थे। लोग उन्हें बहुत प्यार करते थे। उन्होंने लयबद्ध गीत लिखे। इस पद को **काफी** के नाम से जाना जाता है और अधिकांश सूफी कवियों ने इसे अपनाया। शाह हुसैन द्वारा प्रयुक्त संगीत और लय को भी सूफी कवियों ने अपनाया। बुल्लेशाह (1680-1758) सर्वाधिक नामवर सूफी कवि थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में परमानंद, प्रेम और जीव के ईश्वर से मिलन के बारे में लिखा है। उन्होंने अपनी कृतियों में मुख्य रूप से जीवन के आध्यात्मिक पक्ष पर जोर डाला है पर उनकी कविताओं में पंजाब की मिट्टी की गंध है। बुल्लेशाह की कविताएं लोक गीतों में ढल गयीं। आज वह पंजाबी साहित्यिक परम्परा का एक समृद्ध अंग है।

**बोध प्रश्न 2**

1) हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में भक्ति आंदोलन के योगदान पर विचार कीजिए।

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

2) उर्दू साहित्य के विकास में दक्खन राज्यों के योगदान पर विचार कीजिए।

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..........................................................................................................

3) निम्नलिखित पर संक्षेप में लिखिए :

क) **"आदि ग्रंथ**

..........................................................................................................

..........................................................................................................

..................................................................................................

..................................................................................................

..................................................................................................

ख) पंजाबी में लिखने वाले सूफी कवि :

..................................................................................................

..................................................................................................

..................................................................................................

..................................................................................................

..................................................................................................

## 31.5 पश्चिमी भारत

पश्चिम भारतीय भाषाओं में हम यहां गुजराती और मराठी का अध्ययन करेंगे।

### 31.5.1 गुजराती

16वीं शताब्दी के आरंभ से गुजराती साहित्य के इतिहास में एक नये अध्याय की शुरुआत होती है। यह दूसरा चरण कहा जा सकता है। आधुनिक गुजराती साहित्य के आगमन के पहले लगभग दो सौ वर्षों तक इसी चरण का प्रभुत्व कायम रहा। कई अन्य भाषाओं के समान धर्म और रहस्यवाद गुजराती साहित्य की भी विषयवस्तु रही। 16वीं शताब्दी के आरंभ में गुजरात में वैष्णव भक्ति आंदोलन एक प्रमुख सामाजिक विषय था। अतः इस काल का अधिकांश साहित्य भक्ति परम्परा से जुड़ा हुआ है।

इस काल के प्रमुख गुजराती कवि निम्नलिखित हैं :

भलन (लगभग 1426—1500)
नरसिंह मेहता (लगभग 1500—1580)
अक्खो (लगभग 1615—1674)

इनमें से नरसिंह मेहता ने परवर्ती कवियों को विशेष रूप से प्रभावित किया। उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा और बहुरंगी लेखन के कारण उन्हें गुजराती कविता का महान कवि माना जाता है। भलन एक परम्परागत कवि थे। उनकी कविता विषयवस्तु की दृष्टि से श्रेष्ठ और अभिव्यक्ति में गरिमामय होती थी। उन्हें गुजराती छंद का उत्तम कलाकार माना जाता है। अक्खो एक कुशाग्र और तेजस्वी कवि थे और उनकी कविताओं में आध्यात्मिकता के साथ-साथ सामाजिक दृष्टिकोण भी मुखर हुआ है। वे कोई विद्वान नहीं थे पर उन्होंने आध्यात्मिक और सामाजिक सुधार संबंधी गीत बिल्कुल भक्ति में डूबकर गाये हैं।

17वीं शताब्दी के बाद गुजराती साहित्य में गिरावट का रुख शुरू हो जाता है। इसके बावजूद इस काल में तरह-तरह के साहित्य रचे गये। इस समय भक्ति, नीति, अर्द्धतात्विक और धर्मनिरपेक्ष साहित्यों की भी रचना की गयी।

### 31.5.2 मराठी

16वीं-17वीं शताब्दी के मराठी साहित्य में दो प्रवृत्तियां दृष्टिगोचर होती हैं धार्मिक और गैर धार्मिक। इस काल की धार्मिक कविताओं में निम्नलिखित रचनाएं प्रमुख हैं :

- ज्ञानेश्वर की शैली में फादर थॉमस स्टीफिन्स (1549-1619) का **खाविस्त पुराण** लिखा गया।
- मुक्तेश्वर ने **रामायण** और **महाभारत** के अंशों पर आधारित अपनी कविताओं में अपने समाज को प्रतिध्वनित किया है।
- तुकाराम के **अभंग** में लोगों से प्रत्यक्ष रूप में संवाद स्थापित किया गया है।

इस काल के गैरधार्मिक साहित्य में शिवाजी के गुरू और महान् संत रामदास की कविताएं और वामन पंडित (1615-1678) की रचनाएँ शामिल हैं। रामदास की रचनाओं में भक्ति और धार्मिक संवेदना के साथ मुक्ति और राष्ट्रीय पुनर्संरचना का भाव मिला होता था। वामन का दृष्टिकोण विद्वतापूर्ण और शैक्षिक था। इस कारण उसकी भाषा क्लिष्ट और संस्कृतनिष्ठ थी। उनकी प्रमुख रचना गीता की टीका है जिसमें उन्होंने भक्ति के स्थान पर ज्ञान की महत्ता स्थापित की है।

इस काल की गैरधार्मिक कविताओं में **पोवडों** और **लवनियों** को भी गिना जा सकता है। **पोवडा** जीवंत नृत्य नाटिका कविता होती थी और इसकी काव्य भाषा में चटकीलापन होता था। **लवनियों** की प्रकृति रोमांटिक होती थी और इसमें गहरी संवेदनाओं का सुंदर उपयोग किया जाता था।

## 31.6 पूर्वी भारत

पूर्वी भारत में मुख्य रूप से बंगला, असमी और उड़िया भाषा में साहित्य का सृजन हुआ।

### 31.6.1 बंगला

पूर्व में, चैतन्य महाप्रभु के आगमन के बाद बंगला भाषा और साहित्य की समृद्धि शुरू हुई। श्री चैतन्य वैष्णव कवि थे। संतों की वाणी से प्रभावित होकर उन्होंने रहस्यवाद का उपदेश देना आरंभ किया और मैथिली और संस्कृत की मिली जुली नयी भाषा में अपने गीत रचने लगे। यह भाषा ब्रज बोली के नाम से जानी गई और इसके गीतों को पदावली के रूप में जाना गया। वैष्णव संतों की कई जीवनियां भी प्रकाशित हुईं। हालांकि श्री चैतन्य की जीवनी सबसे पहले मुरारी गुप्त ने संस्कृत में लिखी थी पर इसके तुरंत बाद बंगला में वृंदावनदास के द्वारा रचित एक जीवनी सामने आयी। अनुमानतः वृंदावनदास ने श्री चैतन्य की मृत्यु के एक दशक के भीतर ही **चैतन्य भागवत** या **चैतन्य मंगल** की रचना कर दी थी और इसे तत्कालीन सामाजिक अवस्था का सर्वाधिक महत्वपूर्ण दस्तावेज माना जाता है।

कृष्णदास कविराज का चैतन्य चरितामृत इस कड़ी की एक महत्वपूर्ण कृति है। हालांकि इसके लेखन काल के संबंध में विवाद है, पर यह ग्रंथ गौड़ीया वैष्णव धर्म का दार्शनिक आधार प्रस्तुत करता है। इसमें पहली बार दार्शनिक सिद्धांत का प्रतिपादन कर श्री चैतन्य को श्री कृष्ण का अवतार बताया गया है।

श्री चैतन्य की जीवनी में चूड़ामणिदास का गौरंग विजय प्रमुख है। जयनंद और लोचनदास नामक दो कवियों की **चैतन्य मंगल** नाम से दो अलग-अलग रचनाएं उल्लेखनीय हैं। लोचनदास लोक संगीत **धमाली** नामक शैली विकसित करने के लिए ज्यादा जाना जाता है। इस शैली में मुख्य रूप से कृष्ण की प्रेम कथाओं का उल्लेख होता था।

**पदावली** के नाम से प्रसिद्ध गीतकाव्य वैष्णव साहित्य की एक अन्य महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है। इन "पदों" के निर्माण के लिए संस्कृत साहित्य में वर्णित रसों को आधार बनाया गया। राधा-कृष्ण का प्रेम प्रमुख विषय बना। इन ग्रंथों के आरंभ में श्री चैतन्य की स्तुति की जाती थी और राधा और कृष्ण का मिला जुला रूप मानकर उनकी वंदना की जाती थी। कृष्ण लीला को आधार बनाकर कई आख्यानात्मक कविताएँ लिखी गयीं। मुख्य रूप से इनमें **भागवत्** दशम स्कंध में वर्णित वृंदावन लीला को आधार बनाया गया है।

एक तरफ जहां हिंदू जमींदारों और मुसलमान सूबेदारों ने वैष्णव साहित्य को प्रश्रय देना शुरू किया वहीं "मंगल काव्य" के नाम से आख्यानात्मक काव्य की एक अन्य धारा का भी विकास हुआ। इसमें चंडी, मनसा, धर्म आदि स्थानीय देवी-देवताओं का महत्व स्थापित किया गया और शिव तथा विष्णु जैसे पौराणिक भगवानों को बंगाली कृषक या कलाकार के रूप में प्रस्तुत कर पारिवारिक देवी-देवता के रूप में प्रतिस्थापित किया गया। "मंगल काव्य" की वर्णनात्मक शैली पुराणों से प्रेरित है। इन काव्यों पर पौराणिक लेखकों के प्रभाव का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि इन बंगाली कवियों ने शैली पुराण से ली है पर उसे अपने अनुभवों के आधार पर लिखा है। इसी कारण से पुराणों में वर्णित राक्षसों का नाश

करने वाले डरावने भैरव शिव का त्रिशूल खेती के औजारों में बदल दिया गया है और उन्हें एक अर्द्ध विक्षिप्त ग्रामीण योगी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। धर्म मंगल काव्यों में समन्वयात्मक प्रवृत्ति देखने को मिलती है। इसमें पौराणिक नारायण में बौद्ध धर्म को समाविष्ट किया गया है और मुसलमान पीर को सत्यपीर या सत्यनारायण कहा गया है।

कई मुसलमान लेखकों ने भी बंगला भाषा में रचनाएं प्रस्तुत कीं। पहला उल्लेखनीय लेखक दौलत काज़ी था, जो अराकान से आया था। अराकान के बर्मा से स्वतंत्र होने के बाद से ही बंगाल और अराकान के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित हो गया था। अराकान से भागकर वहां का शासक बंगाल में शरण लेने को बाध्य हुआ था और उसे वहां 26 वर्षों तक रहना पड़ा था। इसी कारण से बंगला भाषा वस्तुतः अराकान की राजकीय भाषा बन गयी।

दौलत काज़ी ने गुजरात-राजस्थान क्षेत्रों में प्रचलित लोर-चंढ़ानी या मैना सती की प्रेम कथाओं को बंगला भाषा में प्रस्तुत किया। यह कहा जाता है कि लोर चंढ़ानी उसके मरने के बाद पूरी की गयी। इसे पूर्ण करने वाला कवि अलौल और भी ज्यादा प्रतिभाशाली था। अलौल निचले बंगाल के एक मुसलमान अमीर का बेटा था। उसे पुर्तगाली डाकुओं ने पकड़कर अराकान सेना के सैनिक के रूप में बेच दिया। उसकी संगीत प्रतिभा और कवि रूप से अराकान दरबार के एक मंत्री सुलेमान और राजा के पौष्य भतीजे मगन ठाकुर प्रभावित हुए। इन प्रभावशाली मित्रों ने अलौल को उसके दासत्व से मुक्त करा दिया। उसने मलिक मुहम्मद जायसी की **पद्मावत,** फारसी प्रेम कथा **सैफुल मुल्क बदउज्जमाल** और निजामी की दो कृतियों को बंगला में प्रस्तुत किया। फारसी कविता और अन्य प्रेम कथाओं का बंगला भाषा में अनुवाद कर अलौल ने बंगला साहित्य को गैर धार्मिक विषय प्रदान किए।

16वीं शताब्दी और उसके बाद बंगाल में अनेक मुसलमान लेखक रचना कर रहे थे और हालांकि उन्होंने ज्यादातर गैर धार्मिक विषय (साबिर ने **विद्या मुंदर** का सार लिखा था) ही उठाए थे पर उन्होंने **करबला** की त्रासद कथा तथा पैगम्बरों और गाजियों के विषय में भी लिखा। सैयद सुल्तान की कृति **रसूल अर्ज** दोनों धर्मों से मिली जुली विषयवस्तु पर आधारित है इसमें कुछ हिंदू भगवानों को भी शामिल किया गया है। उसके शिष्यों द्वारा लिखित **युगसंवाद** या **सत्य कली विवाद संवाद में भी** यह प्रवृत्ति पायी जाती है।

### 31.6.2 असमी

बंगला के समान असमी साहित्य का विकास भी भक्ति आंदोलन की छत्र-छाया में हुआ। शंकरदेव ने वैष्णव धर्म धारण किया और एक अच्छा कवि होने के नाते उन्होंने असमी साहित्य को श्रेष्ठ कविताएं प्रदान कीं। शंकरदेव की परम्परा को उनके शिष्य माधवदास ने आगे बढ़ाया। **भक्ति रत्नावली** में कई श्लोक हैं और इसमें भक्ति के विभिन्न आयामों की चर्चा की गयी है। **बारागीता** में वृंदावन बिहारी कृष्ण का वर्णन है और एक अन्य कृति में कृष्ण के बचपन को चित्रित किया गया है। बंगाल और गुजरात में वर्णित राधा कृष्ण की प्रेम कथा में अक्सर पायी जाने वाली कामुकता का असमी वैष्णव कविता में नामो निशान नहीं है। इस दृष्टि से असमी वैष्णव कविताएं अलग हैं। असमी वैष्णव कविताओं में कृष्ण प्रेम की कथा की अति श्रृंगारिकता को त्यागने की कोशिश की गयी है और उनके बाल रूप पर अधिक बल दिया गया है।

असमी लेखकों ने महाकाव्यों और पुराणों का भी अनुवाद किया। राम सरस्वती ने अपने आश्रयदाता कूच बिहार के राजा के लिए महाभारत के कुछ अंशों का अनुवाद किया। इसी प्रकार चंद्र द्विज ने भागवत और विष्णु पुराण के आधार पर कृष्ण कथा लिखी।

असमी गद्य साहित्य का विकास मुख्य रूप से ऐतिहासिक अभिलेखों 'बुरेंजी' के संग्रहण के क्रम में हुआ। ये अहोम राजाओं के निर्देश पर लिखे गये थे। जिन्होंने आसाम पर कब्जा जमाकर यहां राज्य किया और जरूरत पड़ने पर मुगलों से टक्कर भी ली। अहोमो की चीनी-तिब्बती संस्कृति का प्रभाव आसाम पर पड़ा और असमी गद्य भी इससे प्रभावित हुआ।

### 31.6.3 उड़िया

इस काल में उड़िया साहित्य पर भी संस्कृत का प्रभाव मौजूद था। मधुसूदन, भीम, द्विवर, सदाशिव और शिशु ईश्वरदास ने पौराणिक विषयों पर आधारित कई काव्यों की सर्जना की।

धनंजय भार्या ने गैर-पौराणिक विषय पर आधारित प्रेम कथाएं लिखीं। **'रस कल्लोल'** नामक एक कृति में एक अभिनत काव्य प्रयोग किया गया है, जिसमें प्रत्येक पंक्ति 'इ' वर्ण से शुरू होती है। इसमें राधा और कृष्ण की प्रेम कथा कही गयी है। शिशु शंकर दास का **उषाविलास,** देव दुर्लभ दास की **रहस्यमंजरी** और कार्तिक दास का **रुक्मणी बिभा** इसी प्रकार की उल्लेखनीय रचनाएं हैं।

17वीं शताब्दी में रामचंद्र पटनायक की कृति **हारावली** की रचना से उड़िया साहित्य को एक लोक आधार प्राप्त हुआ। इसमें एक आम आदमी नायक और एक किसान की बेटी नायिका है। हालांकि यह अपने आप में एक नूतन प्रयोग था पर आमतौर से उड़िया साहित्य संस्कृत साहित्य का ही अनुगमन करता रहा। भूपति पंडित की रचना **प्रेम पंचमित्र** में धर्म सिद्धांत को भक्ति के सूत्र में पिरोकर काव्य रूप प्रदान किया गया है। इस रचना की भाषा की तुलना अक्सर जयदेव के साथ की जाती है।

हालांकि आमतौर पर उड़िया भाषा पर संस्कृत का प्रभाव स्पष्ट था, पर 18वीं शताब्दी के दौरान एक कृत्रिम शैली का विकास हुआ जिसमें अतिश्रृंगारिकता होती थी और भाषा का चमत्कार होता था। उपेन्द्र भंज (1670-1720) इस धारा का प्रतिनिधि कवि था जिसने उड़िया साहित्य में नये युग का प्रवर्तन किया जो 19वीं शताब्दी तक कायम रहा।

**बोध प्रश्न 3**

1) बंगला साहित्य को चैतन्य परम्परा ने कैसे प्रभावित किया?

......................................................................................................................

......................................................................................................................

......................................................................................................................

......................................................................................................................

......................................................................................................................

2) अध्ययनरत काल के असमी साहित्य पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

......................................................................................................................

......................................................................................................................

......................................................................................................................

......................................................................................................................

## 31.7 दक्षिण भारतीय भाषाएँ

तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम प्रमुख दक्षिण भारतीय भाषाएं थीं जिनमें इस काल में साहित्य की रचनाएं हुईं।

### 31.7.1 तमिल

इस काल के तमिल साहित्य में कई प्रकार के दार्शनिक ग्रंथ, टीकाएँ, साहित्यिक कृतियाँ और पुराण लिखे गये। बहुत-सी कृतियां वैष्णव और शैव धर्म से सम्बद्ध हैं। हरिदास नामक एक वैष्णव कवि ने **इरूसमय्या विलक्कम** (शैव और वैष्णव धर्म की व्याख्या) की रचना की। **मरैनानरबंदर** ने **सिवदारु मोत्तरम्** (1533) नामक एक अन्य तमिल कृति की रचना की। इस पुस्तक में 1200 श्लोक हैं। इनमें कालानुक्रम, मंदिर और उसकी संरचना और धर्म सिद्धांत की बातें की गयी हैं। इसकी लेखक ने **शैवा-समयनेरी** (शैव पंथ का पथ) नामक कृति की भी रचना की जिसमें शैवों के प्रतिदिन की उपासना पद्धति का उल्लेख है। कमलई नानप्रकारा ने तिरुमलुवड़ी पर पुराण और शैव पूजा पर अनेक निर्देशिकाएं प्रकाशित कीं। निरम्बा अलीगया और उनके शिष्यों ने भी पुराण साहित्य को समृद्ध किया। देसिकर ने **सेतु पुराणम्** और **तिरुप्परंगिरि** और **तिरुवैय्युर** पर पुराण लिखे। उनके एक शिष्य ने **तिरुवल्तरपुराणम्** (1592 ई) की रचना की।

मदुरा के नायक का एक अधिकारी मदई तिरुवेंगदनत्थार 17वीं शताब्दी का एक महत्वपूर्ण साहित्यकार था। अद्वैत वेदांत की व्याख्या करते हुए उसने तमिल में एक लंबी कविता लिखी थी।

पुराण तिरुमलैनाथन कृत **चिदंबरा पुराणम्** (1508), नल्लूर वीरकविरायर रचित **अरीचंद्र पुराणम्** (1524), अंदारी का **सुंदर पाड्यन** (1580), काच्चियप्पा शैवाचार्य का **कंदपुराणम्** (1625) और बालासुब्रह्मणयम् कविरायर रचित **पॉलनि तल पुराणम्** (1628) इस काल के अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथ हैं। इसी समय के आसपास तंजोर के एक वेल्लाल कवि एल्लपा नवलार (लगभग 1542-80) ने तिरुवरुर पर एक उत्कृष्ट **कोवई** लिखी। तेनकराइ के एक पांड्य राजा अतिवीररामा ने **नैडतम** नामक एक सुंदर ग्रंथ लिखा। उन्होंने संस्कृत के कई महत्वपूर्ण ग्रंथों का तमिल में अनुवाद भी प्रस्तुत किया।

परनजोति रचित **चिदंबरा पाहियल**, कुरुगई पेरुमल कवियर कृत **मारन अलंकारम** और वैद्यनाथ दसिकर कृत **इलक्कनाविलक्कम** प्रमुख व्याकरणिक ग्रंथ हैं। जैन कवि मंडलपुरुष की कृति **निगंटु चूड़ामणि**, कयदरार कृत **कोयदरम** इस काल के प्रमुख शब्दकोश हैं।

## 31.7.2 तेलुगु

तेलुगु भाषा के स्तर पर तमिल और कन्नड़ से जुड़ी हुई है परंतु इसके साहित्यिक मानदंड संस्कृत पर आधारित हैं।

हमारे इस अध्ययनरत काल में विजयनगर के राजा कृष्ण देव राय (1509-1529) के शासनकाल में तेलुगु साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ। वह स्वयं एक प्रतिष्ठित विद्वान था। उसकी रचना **अमुक्तामालयदा** को तेलुगु साहित्य का महान् काव्य माना जाता है। अल्लारानी पेद्दना उसके दरबार का सर्वोत्कृष्ट कवि था। उन्हें आंध्रकवि तपितामह (तेलुगु कविता के पितामह) की उपाधि प्रदान की गयी थी। **स्वरोचिश मनुसंभवम् या मनुचरित** उसके प्रमुख ग्रंथ हैं। कृष्णदेव राय के दरबार के एक अन्य कवि नंदी तिम्मन ने **पारिजातपहरणम्** की रचना की जिसमें श्री कृष्ण के जीवन के एक अंश को काव्य रूप में प्रस्तुत किया गया था।

भट्टमूर्ति, जो राम राजा भूषण के नाम से विख्यात थे, ने **वसु चरित** (महाभारत के एक अंश पर आधारित काव्य) की रचना कर ख्याति अर्जित की। उन्होंने **हरिशचंद्र नलोपाख्यानम्** नामक काव्य की भी रचना की जिसके प्रत्येक श्लोक के दो अर्थ हैं : इनमें नल के साथ राजा हरिश्चन्द्र की भी कथा कही गयी है। **रामायण** और **महाभारत** की कथाओं को आधार बनाकर पिगली सुरन्न ने **राघव-पांडवीयम्** की रचना की। कुमार धूरजेटि ने 16वीं शताब्दी के आसपास अपनी महान् कृति **कृष्णदेवराय विजयम्** की रचना की जिसमें उन्होंने महान् राजा की विजयों का उल्लेख किया है। तेनाली राम कृष्ण तेलुगु साहित्य का सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्ति है। उन्हें वाक्पटुं और हँसोड़ व्यक्ति के रूप में याद किया जाता है। उनका **पाडुरंग महात्म्यम** तेलुगु कविता की एक महान् कृति मानी जाती है। निम्न जाति की कही जाने वाली मोल्ला एक कवयित्री थी जिसने **रामायण** का लोकप्रिय तेलुगु रूपांतरण प्रस्तुत किया। कुली कुतुब शाह (1550-83) भी तेलुगु साहित्य का संरक्षक था। अदानकी गंगाधर और पोन्नागंती तेलेंगाना ने अपनी पुस्तकें **तपति संमहरणीपाक्ख्यानाम** और ययाजीचरित शाह को समर्पित की थीं।

मनुमन्ची भट्ट ने 16वीं शताब्दी में **हथलक्षण** नामक कृति लिखी। इसमें घोड़ों और उनके प्रशिक्षण के बारे में लिखा गया है।

17वीं शताब्दी में विजयनगर के पतन के बाद तेलुगु साहित्यकारों को गाडिकोटा, नेल्लू, सिद्धवटम, जिंजी, तंजोर और मदुरा जैसे छोटे राज्यों ने शरण दी। सिद्धवटम के मालती अनंत ने **काकुस्तविजयम्** (1590-1610 ई.) लिखा। नेल्लोर के पुष्पगिरि ने भ्रतृहरि कृत नीतिशतक का अनुवाद किया। तंजोर के राजा रघुनाथ नायक ने **वाल्मीकि चरित्रम** नाम से एक आरंभिक गद्य कृति लिखी थी।

### 31.7.3 कन्नड़

अधिकांश कन्नड़ ग्रंथ जैन मुनियों द्वारा रचित हैं। 16वीं-17वीं शताब्दियों के दौरान भी वे कन्नड़ साहित्य को समृद्ध करते रहे।

गेरोप्पा के वादी विद्यानंद ने 1533 ई. में **काव्यरस** का संकलन किया था जिसमें प्रमुख कन्नड़ कवियों का जीवन परिचय दिया गया था। दूसरे जैन विद्वान साल्व (लगभग 1550 ई.) ने भारत रत्नाकर वर्णनी का जैन रूपांतरण प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उन्होंने **त्रिलोककार** (जैन ब्रह्माण्ड मीमांसा पर), **अपराजित शतक** (दर्शन पर), और **भरतेश्वर चरित** (प्रमुख राजा भरत की कथा) की रचना की। उनके द्वारा रचित कई गीत अभी भी जैनियों द्वारा गाये जाते हैं। इसे **अन्नगलापद** के नाम से जाना जाता है।

**चेन्ना बासव पुराण** लिंगायत साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति है। इसके नायक चेन्ना बासव को शिव का अवतार माना गया है। इसमें संतों की कई कहानियां भी सम्मिलित हैं। अदृश्य (लगभग 1595) रचित **प्राधंरायचरित** लिंगायत साहित्य का एक अन्य प्रमुख ग्रंथ है।

विरक्त पंतादर्व कृत **सिद्धेश्वर पुराण** और निजगुन्न शिव योगी कृत **विवेक चिंतामणि** (लगभग 1560) और **शिव योग प्रदीपिका। भावचिंतरत्न** और वीरशैवामृत अथवा मर्ल्लनार्य गुब्बी और सर्वज्ञन्य मूर्ति कृत **सर्वज्ञन्यपदगलू** इस काल के कुछ महत्वपूर्ण शैव ग्रंथ हैं।

इस काल में वैष्णव साहित्य भी लिखे गये। इस क्षेत्र में संस्कृत कृतियों का कन्नड़ में अनुवाद किया गया। कुमार व्यास ने महाभारत के एक अंश का अनुवाद किया और बाकी अंश का अनुवाद 1510 के आसपास तिम्मन्ना ने किया। लक्षमीरा ने **जैमिनी भारत** की रचना की। भिक्षुक गायकों द्वारा गाया जाने वाला लोकप्रिय गीत वैष्णव साहित्य का एक अन्य रूप है। नीलकंठ शास्त्री के अनुसार ये माध्वाचार्य और व्यासआर्य से प्रेरित है। 1510 ई. में चैतन्य की दक्षिण यात्रा से इस लोकप्रिय गीत को काफी बढ़ावा मिला। इस श्रेणी के गायकों में पूरन दास (मृ. 1564) सर्वप्रमुख हैं।

कन्नड़ व्याकरण के क्षेत्र में भट्ट कलंक देव की कृति **कर्नाटक शब्दनिशान** (1604) सर्वोत्तम है।

### 31.7.4 मलयालम

मलयालम ओडयार क्षेत्र में तमिल की एक बोली के रूप में विकसित हुई। चौदहवीं शताब्दी आते-आते इसका स्वतंत्र अस्तित्व कायम हो गया। 15वीं शताब्दी और उसके बाद एक खास परम्परा के कवियों (ट्रावनकोर के निरणम से आये हुए) ने कविता की मलयालम शैली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। राम पनिक्कर इस परम्परा के एक प्रमुख कवि हैं। उन्होंने **भारत गाथा, सावित्री महात्म्यम, ब्राह्मांड पुराणम्** और **भागवतम्** जैसी कृतियों की रचना की।

आधुनिक मलयालम साहित्य के विकास में 16वीं शताब्दी के महान् कवि चेरसेरी नम्बूदरी का महत्वपूर्ण योगदान है। उनकी महान् कृति **कृष्ण गाथा** में कृष्ण के जीवन को सुंदरता से काव्य में ढाला गया है। सोलहवीं शताब्दी के दौरान मलयालम में अनेक लोकप्रिय गीत और गाथा गीत रचे गये। अंजु कृत **तंबूरनपट्टू** और **इरावकुट्टी पिल्ल पाटटू** इसी प्रकार की रचनाएं हैं।

तुकांत रामानुजम् एलूतच्चन ने मुख्य रूप से हिंदू मिथक, धर्म और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएं कीं। **अध्यात्म रामायणम्, किलीपाट्टू, भारतम् किलीपाट्टू** और **हरिनाम कीर्तनम** उनकी कुछ प्रमुख कृतियां हैं।

**अत्तकथा** या कथाकलि नामक नृत्य साहित्य की लोकप्रिय विधा का विकास भी 16वीं शताब्दी के दौरान हुआ। **रामन अत्रम** एक आरंभिक अत्तकथा है। अनेक नई कथाओं ने भी मलयालम साहित्य को समृद्ध किया।

**बोध प्रश्न 4**

1) निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए .

   क) शैव परम्परा का तमिल साहित्य।

   ..............................................................................................

   ..............................................................................................

   ..............................................................................................

   ख) कृष्णदेव राय (1509-1529) के शासनकाल के दौरान लिखा गया तेलुगु साहित्य।

   ..............................................................................................

   ..............................................................................................

   ..............................................................................................

2) जैन विद्वानों के कन्नड़ साहित्य के विकास में योगदान पर विचार कीजिए।

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

..............................................................................................

3) क) आधुनिक मलयालम साहित्य का विकास किसने किया?

   ..............................................................................................

   ..............................................................................................

   ..............................................................................................

   ख) अत्तकथा क्या है?

   ..............................................................................................

   ..............................................................................................

   ..............................................................................................

   ग) तेनाली रामकृष्ण कौन थे?

   ..............................................................................................

   ..............................................................................................

   ..............................................................................................

## 31.8 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान गये होंगे कि अध्ययनरत इस काल में बड़े पैमाने पर समृद्ध साहित्य की रचना हुई थी।

मुगल दरबार ने न केवल फारसी भाषा और साहित्य बल्कि संस्कृत, हिंदी और कुछ अन्य भाषाओं को भी संरक्षण प्रदान किया। अन्य राजाओं, सरदारों और यहां तक कि सामंतों ने भी साहित्यिक गतिविधियों को प्रश्रय दिया। इस काल में दरबारी संरक्षण की परिधि से बाहर भी विपुल साहित्य का निर्माण हुआ। यह इस काल के साहित्य की प्रमुख प्रकृति है। हिंदी और लगभग सभी क्षेत्रीय भाषाओं में भक्ति काव्य की रचना हुई।

लगभग सभी भाषाओं के साहित्य में धर्म और पौराणिक मिथक का वर्चस्व रहा। इस काल में तर्कशास्त्र, दर्शन और व्याकरण की पुस्तकें भी लिखी गयीं। इसके अलावा इस काल में एक

भाषा से दूसरी भाषा में प्रचुर मात्रा में अनुवाद भी हुए। मुख्य रूप से संस्कृत साहित्य का अनुवाद लोक भाषाओं में किया गया और इस प्रकार यह जनसामान्य तक पहुंच सका।

## 31.9 शब्दावली

**चम्पू काव्य** : गद्य और पद्य की मिली जुली साहित्यिक विधा।

**दीवान** : एक कवि का काव्य संकलन जैसे दीवान गालिब।

**मर्सिया** : शोक, दुःख काव्य। यह उर्दू साहित्य में कविता का एक रूप है।

**करबला** : वह प्रसिद्ध स्थान जहाँ पैगम्बर मुहम्मद साहब के नाती इमाम हुसैन शहीद हुए थे।

**गज़ल** : एक काव्य रूप, जिसमें प्रेम को विषय बनाया जाता था। बाद में अन्य विषय भी अपनाये गये। गज़ल मुक्तक होता है। इसका प्रत्येक छंद अपने आप में स्वतंत्र होता है।

**खम्सा** : पाँच पंक्तियों की कविता या अनुच्छेद।

**मसनवी** : गीतात्मक छंद में लिखे काव्य। इसकी शैली वर्णनात्मक होती है।

**प्रशस्ति** : किसी की प्रशंसा में लिखित काव्य या अंश।

**कसीदा** : किसी की प्रशंसा में लिखी कविता।

**किता** : लंबी कविता का छोटा अंश।

**रुबाई** : चार पंक्तियों की छोटी कविता। पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में गीतात्मकता होती है, तीसरी पंक्ति में नहीं।

**श्लेष काव्य** : ऐसा काव्य जिसके दो अर्थ हों।

**तर्जी बंद** : ऐसा छंद जिसमें बार-बार एक पंक्ति दुहराई जाती हो।

**तरकीब बंद** : एक तरह की कविता।

## 31.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

1) देखिए भाग 31.2
2) देखिए भाग 31.3

**बोध प्रश्न 2**

1) भक्ति संतों की साहित्य कृतियों पर विचार कीजिए। देखिए उपभाग 31.4.1
2) आरंभिक चरण में उर्दू दक्खन में एक साहित्यिक भाषा के रूप में उभरी। देखिए उपभाग 31.4.2
3) देखिए उपभाग 31.4.3

**बोध प्रश्न 3**

1) श्री चैतन्य ने भक्ति परम्परा के अंतर्गत लेखन करने के लिए अनेक कवियों को प्रोत्साहित किया। देखिए उपभाग 31.6.1

2) इस काल का असमी साहित्य भक्ति परम्परा से प्रभावित था। देखिए उपभाग 31.6.2

**बोध प्रश्न 4**

1) क) शैव परम्परा के अंतर्गत अनेक तमिल कृतियों की रचना हुई। देखिए उपभाग 31.7.1

   ख) कृष्ण देव राय स्वयं एक कवि और लेखक थे और उन्होंने अनेक कवियों को प्रोत्साहित दिया और प्रश्रय दिया। देखिए उपभाग 31.7.2

2) आरंभिक कन्नड़ साहित्य के निर्माण में जैन विद्वानों का महत्वपूर्ण योगदान है। देखिए उपभाग 31.7.3

3) क) चेर्रीरेरी नम्बूदरी

   ख) मलयालम में नाट्य नृत्य साहित्य का एक लोकप्रिय रूप

   ग) वह एक महत्वपूर्ण तेलुगु लेखक था जो अपनी वाक्पटुता और हँसोड़पन के लिए प्रसिद्ध था।